2

# प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय भ्रमण की भूमिका

अशोक कुमार*

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के द्वारा बच्चों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाया जाता है। इस तरह प्राथमिक स्तर की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है अर्थात वह किस विधि से कक्षा में बच्चों को अधिगम में साहयक होता है। उदाहरण के लिए, अध्यापक-केंद्रित, बाल-केंद्रित और करके सीखने की विधि से, यदि शिक्षक कक्षा में बच्चों को अध्यापक-केंद्रित विधि से पढ़ा रहा है तो वह किसी न किसी रूप में बच्चों को कक्षा में विषयवस्तु को रटवाने से ज्यादा कुछ भी नहीं करता है जिसका परिणाम बच्चे बार-बार विषयवस्तु को भूलेंगे और बार-बार याद करेंगे तथा अंत में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से उनका मन हट भी जाए तो बहुत आश्चर्य की बात नहीं होगी। दूसरी तरफ यदि शिक्षक कक्षा में बाल केंद्रित विधि से शिक्षण कराता है तो निश्चित रूप से बच्चे शिक्षण में आनंदित होकर भागीदारी करेंगे और बच्चों की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ बच्चों का अधिगम भी स्थायी हो जाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के अधिगम में संवेदियों का अधिक से अधिक प्रयोग करके अधिगम को आनंदपूर्ण बनाया जा सकता है। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत की प्रथम अवस्था में संवेदी की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया है। बच्चों को यदि करके सीखने का अवसर दिया जाए तो बच्चें निश्चित रूप से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आनंदित होकर अपनी भूमिका को और बढ़ाने का प्रयास करेंगे। इसी संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बच्चें खेल-खेल में अपनी विषयवस्तु को कंठस्थ करने में सहायक होंगे जिसमें की भ्रमण विधि को एक उदाहरण के रूप में देख सकतें हैं। इस विधि के द्वारा बच्चे स्थायी अधिगम करते हैं जिसको नई शिक्षा नीति के तहत अनुभवजन्य विधि के रूप में रखा गया है, जो बच्चों के अधिगम को आनंदपूर्ण बनाता है। अगर बच्चों को इस प्रकार से सीखाया जाएगा तो बच्चे अधिगम प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और अधिगम को किसी भी तरह का बोझ नहीं समझेंगे। इस प्रकार अधिगम को सरल विधि (भ्रमण विधि) से पूर्ण किया जा सकता है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के अधिगम को सरल व आनंदपूर्ण बनाने में काफी मददगार सिद्ध होगा। प्रस्तुत लेख में प्राथमिक स्तर पर भ्रमण विधि से अधिगम कराने के महत्व का वर्णन किया गया है जो कि प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए सहायक होगा।

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, डिफेंस कालोनी, दिल्ली 110 024

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण (संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों) विकास करके बच्चों को उनके चारों तरफ के वातावरण से अवगत कराते हुए वास्तविक जीवन के लिए तैयार करना है। जिससे बच्चों के जीवन के किसी भी स्तर पर आने वाली चुनौतियों का सामना करके जीवन को सरल बना सकें। चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा के द्वारा बच्चों को कुछ मुख्य प्रकार के कौशलों को सिखाया जाता है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के जीवन को सरल बनाने में अपनी भूमिका निभाती है और जीवन को आनंदपूर्ण बनाने में भी सफल हो सके। अब इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक ही विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माता होता है। कक्षा-कक्ष को बेहतर व जीवंत बनाने में शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों का अधिगम अधिकतर इंद्रियजन्य होता है अर्थात अधिगम इंद्रियों पर अधिक निर्भर करता है। पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धांत में प्रथम संवेदी अवस्था होती है अर्थात बच्चे प्राथमिक अवस्था में अपने संवेदी से ज्यादा सीखते हैं। वह जिस वस्तु को देखते हैं, जिसे छूते हैं, उसी के अनुभव के आधार पर उनका मूर्त चिंतन शुरू हो जाता है और फिर इसका प्रयोग वह अपने दैनिक जीवन में करते हैं और यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आनंदपूर्ण रूप से भाग लेते हैं। इसलिए प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को स्थायी रूप से अधिगम कराने में क्षेत्रीय भ्रमण विधि की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। सीखने की इस विधि में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विषयवस्तु से संबंधित किसी विशेष स्थान पर ले जाकर और विषय वस्तु के साथ जोड़कर निरीक्षण कराना और उनके प्राप्त अनुभवों पर चर्चा करके उनके अधिगम को स्थायी बनाया जाता है। इसी के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मार्गदर्शन सिद्धांत एक में भी "ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना" अर्थात बच्चों को भ्रमण पर ले जाना और विषयवस्तु को जोड़कर अधिगम को अधिक स्थायी बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह वर्णित है कि सभी कक्षाओं में अनुभवात्मक अधिगम का प्रयोग करके शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाना होगा। स्थानीय भ्रमण विधि का प्रयोग कर यदि हम बच्चों को पढ़ाते हैं तो शिक्षण का मूल आधार होगा बच्चों को उनके द्वारा निरीक्षण कर जानने की कोशिश करना। निरीक्षण कक्षा-कक्ष में या बाहर दोनों जगह संभव होगा लेकिन क्षेत्रीय भ्रमण के लिए विद्यार्थियों को किसी स्थान विशेष पर भ्रमण के लिए ले जाया जाए। आज कंप्यूटर एडेड लर्निंग में सजीव दुनिया को एनिमेशन स्ट्रिप्स के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे बच्चों से अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर देखने की उम्मीद की जाती है। उदाहरण के लिए, सजीव और निर्जीव का पाठ शुरू करने से पहले, यदि कोई शिक्षिका अपनी कक्षा को स्कूल के पास के मैदान में सैर पर ले जाती है, और लौटने पर प्रत्येक बच्चे को दस जीवित चीजों और दस निर्जीव चीजों के नाम लिखने के लिए कहती है, जो उन्होंने बाहर देखे हैं।

इस प्रकार शिक्षण को और अधिक सरल रोचक व सजीव बनाया जा सकता है। इस विधि से बालक

मूर्त से अमूर्त चिंतन की तरफ जाता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को चाहिए कि वह बच्चों को पुराने किलों, भवनों, खंड्रों, महलों, युद्ध क्षेत्रों, गुफाओं, मकबरों, मीनारों, नहरों, उद्योगों आदि स्थानों की यात्रा करवाएँ।

## प्राथमिक स्तर के शिक्षण में क्षेत्रीय भ्रमण विधि के उद्देश्य

वैसे तो हर स्तर के शिक्षण में क्षेत्रीय भ्रमण विधि का अपना ही महत्व होता है, परंतु प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भ्रमण विधि का महत्व अत्यधिक होता है। इससे बच्चों के ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक आदि पक्षों का विकास होता है। अत: इस विधि के उद्देश्यों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

- **मूर्त से अमूर्त चिंतन**— प्राथमिक स्तर पर शिक्षक जब भ्रमण विधि से कक्षा में शिक्षण कराते हैं तो बच्चों के चिंतन को मूर्त से अमूर्त चिंतन की तरफ ले जाने का कार्य करता हैं अर्थात बच्चों का अधिगम व्यवस्थित रूप से स्थायी अधिगम का रूप ले लेता है।
- **बच्चों का व्यापक विकास**— भ्रमण विधि से प्राथमिक स्तर के शिक्षण में बच्चों का व्यापक विकास होता है, जैसे— ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक आदि पक्षों का विकास होना।
- **अवलोकन व निरीक्षण शक्ति का विकास**— प्राथमिक स्तर के शिक्षण को भ्रमण विधि से संचालित किया जाता है तो बच्चे की अवलोकन व निरिक्षण शक्ति का विकास होता है जिससे बच्चे अपनी कक्षा में विषय के साथ जुड़कर कल्पना करने में सक्षम हो सकेंगे।
- **व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि करना**— बच्चों को विषयवस्तु से संबंधित स्थानों पर भ्रमण कराके विषयवस्तु के प्रति बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि कराई जा सकती है।
- **अनुभवों, अभिवृत्ति और मनोवृत्तियों में परिवर्तन करके विद्यार्थियों में आदर्शों का निर्माण कराना**— विषयवस्तु को लेकर बच्चों के अनुभवों, अभिवृत्ति और मनोवृत्तियों में परिवर्तन करके विद्यार्थियों में आदर्शों का निर्माण कराना इत्यादि, उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

***प्राथमिक स्तर पर भ्रमण के संचालन से पूर्व शिक्षक को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।***

- भ्रमण के उद्देश्य का निर्धारण करना अति आवश्यक है, उद्देश्य के बिना भ्रमण से बच्चों में सिर्फ थकावट व विभिन्न प्रकार के संघर्ष ही जन्म लेंगे और किसी भी प्रकार का अधिगम संभव नहीं होता जिससे बच्चों के समय की बर्बादी होगी। अतः भ्रमण से पूर्व शिक्षक को चाहिए कि वह विषयवस्तु से संबंधित भ्रमण के स्थान का चुनाव सही रूप से करें जिससे पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।
- भ्रमण से पूर्व बच्चों के संरक्षकों और उच्च अधिकारियों की अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होता है जिससे भ्रमण को अर्थपूर्ण बनाया जा सके।
- संभव हो तो भ्रमण से पूर्व बच्चों के संरक्षकों के साथ वार्तालाप करनी चाहिए जिससे वह भ्रमण

के महत्व को समझ सके और बच्चों के भ्रमण में किसी भी तरह की बाधा उत्पन्न न करें।

- सभी बच्चों को भ्रमण का समय निश्चित करके पहले से बता देना चाहिए और बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बाँट देना चाहिए और प्रत्येक समूह के लिए एक निर्देशक की नियुक्ति कर लेनी चाहिए।
- संभव हो सके तो पर्यटन स्थल पर अगर ठहरने का उद्देश्य हो तो व्यवस्था के लिए व्यवस्थापक से पत्र व्यवहार करके व्यवस्था को बना लेना चाहिए। जिसमें वहाँ पर किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो सके।
- आवश्यक सामग्री, जैसे— खाने का सामान और नोटबुक हो तो उसकी एक दिन पूर्व ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए। जिसमें संभव हो सके तो बच्चे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को नोट करें और अपनी कक्षा में समय-समय पर चर्चा करें, जिससे शिक्षण प्रक्रिया को और रोचक बनाया जा सकता है।
- शिक्षक को चाहिए कि वह भ्रमण के सारे विवरण, जैसे— सफलताएँ और असफलताओं और उनके कारणों आदि को एक रिपोर्ट के रूप में बनाकर एकत्रित करें, जिससे आने वाले समय में सभी को जागरूक किया जा सके।
- भ्रमण के उपरांत विद्यालय में बच्चों को उनके संरक्षकों को सुपुर्द करना चाहिए और संरक्षक के हस्ताक्षर भी करवाने चाहिए।

## क्षेत्रीय भ्रमण की योजना

1. **समस्या व प्रकरण का चयन**— शिक्षक को भ्रमण से पूर्व पाठ्यक्रम से प्रकरण का चयन करना चाहिए, ताकि वह छात्रों को भ्रमण का उद्देश्य स्पष्ट कर सकें। इससे भ्रमण को अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।
2. **पर्यटन के स्थान का चयन**— भ्रमण तभी सफल होता है जब शिक्षक भ्रमण स्थल का चयन ठीक ढंग से कर सके। शिक्षक को चाहिए कि विषय से संबंधित तथा उद्देश्य पूर्ण स्थल का चुनाव करे। उदाहरण के लिए, कक्षा चार में कुतुब मीनार पाठ को पढ़ाने से पहले कुतुबमीनार का भ्रमण कराया जाए जिससे कक्षा-कक्ष शिक्षण को सजीव व रोचक बनाया जा सके।
3. **पर्यटन का संगठन**— पर्यटन या भ्रमण से पूर्व शिक्षक को एक बजट बनाना चाहिए। बजट में शिक्षक छात्रों की संख्या तथा उनके खानपान व आवश्यक सामग्री को ध्यान में रखें। बजट की मांग से पहले विद्यालय अधिकारियों एवं अभिभावकों से अनुमति ले लेनी चाहिए।
4. **क्रियान्वयन**— गंतव्य स्थान पर पहुँचने पर आवश्यक निर्देश एवं सूचनाएँ छात्रों को दे दी जानी चाहिए। समूह दलों के नेताओं को उनसे संबंधित निर्देश देकर, शिक्षक वह एक मार्गदर्शक बनकर छात्रों को उस स्थान की पूर्ण जानकारी देता हैं और अंत में छात्रों को वापस विद्यालय में लेकर आ जाता है।
5. **मूल्यांकन**— अंत में भ्रमण का मूल्यांकन जरूर करना चाहिए। जिस उद्देश्य से भ्रमण कराया गया हो क्या वह पूरा हुआ या नहीं पूरा नहीं हुआ, तो भविष्य में होने वाले भ्रमणों के द्वारा पूरा किया जा सकेगा। इस तरह मूल्यांकन किसी भी प्रकार की प्रक्रिया या रूपरेखा का एक सही चित्रण प्रस्तुत करने में सफल होता है।

***भ्रमण में शिक्षक की भूमिका***

जैसा कि यह पहले से ही विदित है कि शिक्षक किसी भी कक्षा को संचालित करने में अहम भूमिका निभाता है। अत: भ्रमण के दौरान भी शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। जिसको हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं—

- **आयोजक**— सर्वप्रथम शिक्षक की भूमिका भ्रमण में आयोजक की होती है। जिसका मुख्य कार्य भ्रमण की योजना बनाना तथा उसका क्रियान्वयन करना होता है। शिक्षक द्वारा भ्रमण स्थल का चयन, छात्रों की सूची, परिवहन की व्यवस्था, छात्रों के खानपान का आयोजन आदि कार्यों की योजना बनाई जाती है।
- **निर्देशक के रूप में**— शिक्षक छात्रों तथा परिजनों दोनों के लिए निर्देशक की भूमिका का निर्वाह करता है। जहाँ परिजनों से छात्रों का मेडिकल इतिहास पता करना, भ्रमण के लिए परिजनों को निर्देशित करना कि वे अपने बच्चों को किस प्रकार निर्देशित करें, वहीं दूसरी ओर छात्रों को निर्देशित करना कि उन्हें वहाँ जाकर क्या अवलोकन करना है तथा किन-किन बातों का ध्यान रखना है।
- **संरक्षक**— शिक्षक की भूमिका छात्रों के संरक्षण की भी होती है। छात्रों को ले जाना और वहाँ किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचाने तथा उन्हें घर तक वापस लाने में संरक्षक की भूमिका का निर्वहन भी करना पड़ता है। इस प्रकार शिक्षक एक संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका अदा करता है।
- **योजना बनाना**— शिक्षक के द्वारा भ्रमण विधि की योजना बनाई जानी चाहिए कि कितने समय के लिए योजना बनाई जाए, कितने छात्रों के लिए योजना बनानी है तथा वहाँ क्या अवलोकन करना है? इस सब की पूर्व में ही योजना बनाई जाए।
- **छात्रों की सुरक्षा का ध्यान रखना**— शिक्षक के द्वारा छात्रों की सुरक्षा का ध्यान रखा जाना चाहिए। अतः छात्रों को निर्देशित किया जाना चाहिए कि वह पंक्ति में रहे, कोई बच्चा कहीं छूट ना जाए या कोई दुर्घटनाग्रस्त ना हो जाए और शिक्षक को समूह बनाकर एक समूह के लिए एक मुखिया चयन करना चाहिए।
- **आवश्यक सामग्री की सूची बनाना**— शिक्षक के द्वारा भ्रमण के दौरान आवश्यक सामग्री, जैसे— फर्स्ट एड बॉक्स, छात्रों की सूची बनाना, उनके खाने का आयोजन करना आदि शामिल है।
- **भ्रमण का मूल्यांकन करना**— भ्रमण के बाद शिक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि जिन उद्देश्यों के लिए भ्रमण का आयोजन किया गया था वह उद्देश्य पूरे हुए या नहीं तथा क्या कमियाँ रह गई? जिससे की भविष्य में उन बातों का ध्यान रखा जा सके और मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

## भ्रमण के दौरान सावधानियाँ

क्षेत्रीय भ्रमण में जाना बच्चों के लिए सुखद अनुभव होता है, क्योंकि उन्हें नई जगह जाने का मौका मिलता है। क्षेत्रीय भ्रमण बच्चों को आमतौर पर मौज-मस्ती के साथ-साथ अधिगम कराने के लिए होता है। क्षेत्रीय

भ्रमण पूर्णतः बाहरी वातावरण है, इसलिए यहाँ कुछ बातें हैं जो शिक्षकों को क्षेत्रीय भ्रमण ले जाने से पहले ध्यान रखनी चाहिए।

- **अभिभावक अनापत्ति पत्र**— विद्यार्थी एक अनापत्ति पत्र अपने माता-पिता से हस्ताक्षर करवा कर रखें जिसमें ट्रिप की पूर्ण जानकारी हो, जैसे— तारीख, दिन, समय, जगह का नाम, अध्यापक या अध्यापिका का मोबाइल नंबर इत्यादि विवरण हों। साथ ही माता-पिता को यदि बच्चे के बारे में कोई सूचना देनी हो या किसी समस्या से अवगत करवाना हो, जैसे— बच्चे को किसी प्रकार की कोई एलर्जी हो, बीमारी हो अथवा सफर के दौरान बेहोशी या चक्कर आदि की शिकायत हो तो इसका विवरण भी पूर्व ही प्राप्त होना चाहिए, जो शिक्षक के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता है।
- **बच्चों को समूहों में विभाजित करना**— अधिक संख्या में विद्यार्थियों को ले जाना व सब का ध्यान व्यक्तिगत तौर पर रख पाना मुश्किल है, इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को समूहों में बाँट कर उनके लिए उन्हीं के समूह में से एक मुखिया का चयन करें। जिससे ग्रुप का मुखिया ध्यान रखेगा कि ग्रुप में सभी उपस्थित हैं या नहीं। यदि कोई उपस्थित नहीं है, तो तुरंत शिक्षक को सूचना दें।
- **समूह में जोड़ें बनाना**— समूह के अंदर भी बच्चों के जोड़े बनाएँ जिससे एक साथी दूसरे साथी के साथ रहे और उसका ध्यान भी रखे।
- **यूनिफॉर्म**— अपने विद्यार्थियों की यूनिफॉर्म की अलग पहचान रखें, ताकि शिक्षक को दूर से ही पता चले कि कौन-सा बच्चा उनकी कक्षा या विद्यालय का है। विद्यार्थी अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों में मिश्रित ना हो जाएँ। कई बार ऐसी समस्या अधिक व्यापक हो जाती है।
- **जाने से पूर्व बातचीत**— जाने से पूर्व उनसे बातचीत करना अर्थात जाने वाले स्थान के बारे में सारांश में बताना तथा क्या व क्यों की जानकारी अवश्य देनी चाहिए, ताकि बच्चों को पता हो कि ट्रिप पर उन्हें क्या-क्या करना है? तथा बच्चों में एक उत्साह के साथ अनुशासन बना रहे।
- **प्राथमिक उपचार का प्रबंध**— विद्यार्थी को न चाहते हुए भी यदि चोट लग जाए तो प्राथमिक उपचार की आवश्यकता होती है, इसलिए प्राथमिक उपचार का प्रबंध अर्थात कुछ खास-खास दवाओं को साथ में रखना चाहिए।
- **सुरक्षित परिवहन व्यवस्था**— निजी या किराए पर वाहन के बजाय विद्यालय के वाहन का उपयोग किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी सुरक्षित विद्यालय से गंतव्य स्थान पर पहुँच सके और फिर सावधानीपूर्वक वापस आ सके।

***क्षेत्रीय भ्रमण के फायदे***

- **व्यावहारिक ज्ञान की उपलब्धि**— इसके द्वारा विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है जो कि स्थायी होती है। वास्तविक वस्तुओं का अनुभव होता है अर्थात बच्चों का संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक रूप से विकास होता है।

- **मानसिक विकास**— इस विधि के द्वारा बच्चों की मानसिकता का विकास होता है, क्योंकि बच्चे किसी भी वस्तु या चीज को देखते हैं तो वह कई पक्षों से सोचते हैं, फिर कल्पना करते हैं और इस प्रकार उनका मानसिक विकास होता है।
- **विषयवस्तु के रटने पर रोक**— इस विधि द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान व्यावहारिक तथा चिर स्थायी होता है जो रट्टेबाजी को रोकता है। रटा हुआ ज्ञान या सूचना स्थायी नहीं होती है अर्थात विद्यार्थी बार-बार भूलता रहता है, जो विद्यार्थियों पर बोझ बन जाता है और विद्यार्थी धीरे-धीरे शिक्षण से दूर भागने लगते हैं। जिसके परिणाम फिर बहुत भयानक होते हैं।
- **परीक्षा में बेहतर परिणाम**— इस विधि से विद्यार्थी को वास्तविकता का ज्ञान होता है। विद्यार्थी विषय को अच्छे से समझ लेता है। सीखने में उसे सहायता प्राप्त होती है, विद्यार्थी परीक्षा और प्रोजेक्ट में बेहतर परिणाम लाते हैं और उनमें सीखने के प्रति उत्साह बना रहता है, जिससे विद्यार्थी सदैव अपनी पढ़ाई के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं।
- **पुनर्बलन**— विद्यार्थियों के लिए विषय की मजबूती या पुनर्बलन के लिए सहायक सिद्ध होती है। इस विधि में विद्यार्थी अपने नए-नए अनुभवों से प्रभावित होता है और सीखता है और यही सीखने के लिए धनात्मक पुनर्बलन का कार्य करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह विधि प्राथमिक कक्षाओं के लिए तो बहुत उपयोगी है। इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान से बच्चों में शैक्षिक गुणों का विकास होता है। वही उसके व्यक्तित्व को भी प्रभावशाली बनाता है।

***प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भ्रमण विधि के दोष***

- **खर्चीली विधि**— भ्रमण विधि खर्चीली विधि है, इस में आने-जाने तथा किसी विशेष स्थान पर लगने वाली टिकट का किराया व खानपान में अत्यधिक खर्च आता है, इसलिए क्षेत्रीय भ्रमण विधि से पढ़ाने का प्रयोग कम ही शिक्षक करते हैं। यहाँ तक कि विद्यार्थियों के प्रति जवाबदेही भी काफी बढ़ जाती है।
- **सभी विषयों के लिए उपयुक्त नहीं**— भ्रमण विधि के द्वारा विज्ञान व सामाजिक विज्ञान के उपविषय उचित रूप से कराए जा सकते हैं तथा उसमें भी सभी उपविषयों के लिए यह विधि सफल नहीं है, जैसे— राजनीति विज्ञान के सभी उपविषय भ्रमण विधि द्वारा संभव नहीं है। अन्य विषयों के लिए भी यह विधि उतनी उपयुक्त नहीं है।
- **अधिक समय लगना**— भ्रमण विधि में समय अधिक लगता है। एक दिन में किसी एक स्थान पर ही लेकर जाया जा सकता है जिससे उन्हें अन्य विषयों का नुकसान होता है तथा पाठ्यक्रम समय पर समाप्त नहीं हो पाता।
- **शिक्षक का अनुभवी न होना**— भ्रमण विधि का अर्थ केवल भ्रमण कराना ही नहीं होता, उसमें कुछ उद्देश्य निहित होते हैं तथा उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक का अनुभवी होना आवश्यक है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाने से पहले उचित निर्देश नहीं देता है, तो वह भ्रमण निरर्थक सिद्ध होगा व उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाएगी।

- **छात्रों की सुरक्षा**— विद्यार्थियों की सुरक्षा की भी समस्या होती है जहाँ 40 विद्यार्थियों पर केवल एक या दो शिक्षक होते हैं, ऐसी स्थिति में उनकी सुरक्षा व देखभाल की एक बड़ी समस्या होती है।

***प्राथमिक स्तर के बच्चों को क्षेत्रीय भ्रमण के लिए शिक्षकों को सुझाव***

- **उद्देश्य निर्धारित करना**— शिक्षक को भ्रमण विधि पर ले जाने से पहले उसके लिए उद्देश्य निर्धारित कर लेने चाहिए कि विद्यार्थियों को उस भ्रमण के बाद किन-किन बातों का ज्ञान हो जाएगा तथा शिक्षक किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति कर पाएगा तथा कितने उद्देश्य हैं, जो संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष से संबंधित हैं।
- **विद्यार्थियों को निर्देशित करना**— शिक्षक विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाने से पहले ही उन्हें निर्देशित कर दे कि उन्हें वहाँ जाकर किन-किन चीजों का अवलोकन करना है। ताकि शिक्षक द्वारा निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति की जा सके, लेकिन शिक्षक को ऐसा भी ध्यान रखना चाहिए कि सुझाव देते समय बच्चों के सीखने को कहीं वह प्रतिपादित तो नहीं कर रहा। बच्चों को सीखने के लिए एक खुला रास्ता देना चाहिए।
- **छात्रों के स्वास्थ्य का निरीक्षण करना**— अध्यापक द्वारा छात्रों के स्वास्थ्य का अवलोकन किया जाना चाहिए, ताकि यह पता चल जाए कि किसी छात्र को आने-जाने में किसी प्रकार की समस्या तो नहीं होती या उनके द्वारा किसी प्रकार की दवाई का सेवन तो नहीं किया जा रहा है।
- **प्रोत्साहन**— भ्रमण स्थल पर पहुँचकर शिक्षक की भूमिका एक प्रोत्साहक की भी हो जाती है, जो छात्रों को प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों को उस स्थान के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए तथा प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। इस प्रकार शिक्षक को काफी उत्साहित होना चाहिए तथा पूरे समय विद्यार्थियों में घुल-मिलकर रहना चाहिए जिससे बच्चे खुशी-खुशी सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें।
- **मार्गदर्शक**—शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक की भी होती है जो विद्यार्थियों को भ्रमण स्थल के विषय में बताता है यह महत्वपूर्ण बात है कि शिक्षक भ्रमण के लिए जिस स्थान का चुनाव कर रहा है। उसका ज्ञान शिक्षक को पहले से ही होना चाहिए, ताकि उस स्थान से पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके और शिक्षक विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका को आसानी से अदा कर सके और विद्यार्थियों के स्तर से ही सभी सीखने की जिज्ञासाओं को पूरा कर सकें।
- **मूल्यांकन कर्ता**— शिक्षक की भूमिका एक मूल्यांकन कर्ता की भी होती है, लेकिन मूल्यांकन करें की क्षेत्रीय भ्रमण के उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं। किसी भी कार्य के उद्देश्य पूर्ण होने या ना होने को बताता है। यहाँ तक कि अगर किसी कार्य को करने के पूर्व-निर्धारित उद्देश्य होते हैं तो उसके पूरा करने की प्रक्रिया भी अच्छी होगी और फिर उसका मूल्यांकन भी भली प्रकार से किया जा सकता है जिससे मूल्यांकन कर्ता को संतुष्ट किया जा सकता है।

***प्राथमिक स्तर के बच्चों को क्षेत्रीय भ्रमण पर ले जाने में अभिभावकों की भूमिका***

प्राथमिक स्तर के बच्चों को विद्यालय की तरफ से क्षेत्रीय भ्रमण पर जब लेकर जाया जाता है तो विद्यालय व शिक्षकों को तो बहुत सारी जिम्मेदारियाँ निभानी ही होती हैं, परंतु साथ ही साथ अभिभावकों की भी इस क्षेत्रीय भ्रमण को सफल बनाने के लिए कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। जिनको निभाना एक अभिभावक का कर्तव्य है, जो विद्यार्थियों के स्थायी रूप से सीखने में सहायक सिद्ध होगा। इस संबंध में अभिभावकों की निम्न जिम्मेदारियाँ होती है—

- **क्षेत्र का ज्ञान**— विद्यालय की तरफ से या शिक्षक की तरफ से विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को क्षेत्र भ्रमण की पूर्व सूचना दे दी जानी चाहिए। अतः अभिभावकों की यह जिम्मेदारी है कि वह व्यक्तिगत रूप से अपने बच्चे को उस क्षेत्र के बारे में थोड़ा बताएँ कि शिक्षक उन्हें कहाँ ले कर जाने वाले हैं और क्यों, ताकि बच्चे मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार हो जाएँ और उनमें एक उत्साह पैदा हो सके।
- **अनुशासन में रहने की स्पष्टता**—अभिभावकों को अपने बच्चों के बारे में अच्छे से पता होता है। अतः यदि विद्यार्थी अधिक शरारती है तो अभिभावकों को उन्हें अनुशासन में रहने व अध्यापकों के निर्देशों का पालन करने की आवश्यकता स्पष्ट कर देनी चाहिए। ऐसा न करने पर संभावित परिणामों के बारे में बताना चाहिए। उदाहरण के लिए, "यदि तुम अपने अध्यापिका से छिपकर या नजर बचाकर इधर-उधर भाग गए तो तुम गुम भी हो सकते हो" इत्यादि।
- **जलपान की व्यवस्था**— भ्रमण वाले दिन विद्यार्थी को ऐसा भोजन देना चाहिए जो सुविधाजनक तरीके से ग्रहण किया जा सके। इसमें फलों को भी शामिल किया जाना चाहिए और पीने के लिए पर्याप्त पानी देना चाहिए। यदि गर्मियों का मौसम है तो उन्हें नींबू पानी या ग्लूकोज का पानी दिया जा सकता है जिससे बच्चे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकें और अपने क्षेत्र भ्रमण का आनंद ले सकें।
- **साफ व निर्धारित यूनिफॉर्म पहनाना**— भ्रमण वाले दिन विद्यार्थियों को सही यूनिफार्म पहनानी चाहिए जो विद्यालय द्वारा पूर्व-निर्धारित हो, ताकि विद्यार्थी आसानी से वहाँ पहचान में आ सके कि वह किस विद्यालय के विद्यार्थी हैं। साथ ही एक अतिरिक्त यूनिफार्म भी उनके बैग में रख देनी चाहिए। किसी कारणवश यदि बच्चे की यूनिफॉर्म गंदी हो जाए या गीली हो जाए तो वह पूरा दिन उसमें व्यतीत न करें, इसके लिए एक अतिरिक्त यूनिफॉर्म बैग में रख देनी चाहिए।
- **हल्का बैग देना**— अभिभावक को ध्यान रखना चाहिए कि आज उनका बच्चा क्षेत्रीय भ्रमण पर जा रहा है तो इसके लिए उनके बैग में कोई भी किताब या कॉपी रखने की आवश्यकता नहीं है। उनके बैग में केवल खानपान की चीजें, सैनिटाइजर या रुमाल इत्यादि जरूरी चीजें ही रखनी चाहिए, जिससे बच्चे का बैग हल्का रहे और उसे उठाने में किसी प्रकार की भी कोई समस्या ना हो।

- **विद्यालय पहचान पत्र**— अभिभावकों को अपने बच्चे का पहचान पत्र जो कि विद्यालय द्वारा दिया गया होता है, वह अवश्य पहनाना चाहिए। अभिभावकों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पहचान पत्र पर दी गईं सूचनाएँ मुख्यतः पता और फोन नंबर बिल्कुल सही हो। यदि यह दोनों चीजें बदल गईं हो तो अभिभावकों को इसकी सूचना भ्रमण वाले दिन से पूर्व ही शिक्षक को दे देनी चाहिए। यदि संभव हो तो दो-तीन अतिरिक्त फोन नंबर भी देना चाहिए और जब तक विद्यार्थी क्षेत्र भ्रमण से वापस नहीं आ जाता तब तक उन्हें फोन पर उपलब्ध रहना चाहिए।
- **बच्चे से संबंधित बीमारी की सूचना**— यदि बच्चे को किसी प्रकार की बीमारी, एलर्जी या कमजोरी है, तो इस बात की सूचना अभिभावक के द्वारा अध्यापक को दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, बहुत से छोटे बच्चों को उल्टी लगने की समस्या हो जाती है तथा बहुत से बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं जिसके कारण वे बहुत अधिक चल नहीं पाते या अन्य किसी प्रकार की बीमारी हो सकती है। इससे अध्यापकों को भी अचानक किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा और बच्चे अपने क्षेत्र भ्रमण का आनंद ले सकेंगे।
- **अध्यापकों को सहयोग**— क्षेत्रीय भ्रमण के अंतर्गत बच्चों को जिस क्षेत्र में लेकर जाना है उस क्षेत्र के बारे में उचित जानकारी देकर अभिभावक अध्यापकों को भी अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। एक या दो अभिभावक आपसी सहमति के बाद स्वयं भी उस क्षेत्र के दौरे पर जा सकते हैं। इस प्रकार यदि अभिभावकों का भी सहयोग होगा तो बच्चों का क्षेत्रीय भ्रमण सुखद व आनंदपूर्ण होगा और उनके सीखने में भी दोनों का शिक्षक व अभिभावकों का सहयोग काफी फलदायक होगा।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण में करके सीखना, खेल-खेल में सीखना और भ्रमण विधि से सीखना और सिखाना दोनों ही आनंदपूर्ण होता है। इसमें बच्चे भी पूर्ण रूप से सहभागी होते हैं और बच्चों के सीखने का स्तर स्थाई होता है। इस तरह बच्चे अपने ज्ञान के खुद निर्माता होतें हैं तथा कक्षा-कक्ष को सजीव व रुचिपूर्ण बनाने में सहयोगी होते हैं। बच्चे कक्षा में अनुशासित होकर विषयवस्तु पर ध्यान देतें है अर्थात इस प्रकार बच्चों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन दिखाई देता है।

## संदर्भ


कुमार, अशोक. 2015. विद्यालय— अनुभव कार्यक्रम से जुड़ी कुछ स्मृतियाँ. *प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद पत्रिका*. अप्रैल 2015, वॉल्यूम 1, ISSN: 970-9312. पृ.सं. 58–61. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/prathmikshikshak/pspdfjan2016.pdf

मंगल, एस.के. 2019. *शिक्षा मनोविज्ञान*. पी.एच.आई., नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 1966. *कोठारी कमीशन रिपोर्ट*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.